पोवारी बाल ई मासिक

झुंझुरका

फेब्रुवारी 2023

साल- २ रो , अंक २१वो

पोवारी बाल बाचक चळवळ प्रस्तुत

संपादकीय.......

बाल दोस्तहो......पोवारी आमरी मायबोली आय. पोवारी बोलीमा आपली पोवारी संस्कृती बसी से. आपला नेंग दस्तुर, बिया बरपनमा पयलेपासून पोवारी लोकगीत गायेव जासेत. पोवारी बोली बोलनला जसी मिठी से. तसीच वा आयकनलाबी मिठी से. पोवारी बोलीमाका गाना आयकनला बहुत मिठा लग् सेती. आतात् बिया बरपन, नेंग दस्तुरमा गाया जानेवाला गाना काही व्यक्ती संकलीत करस्यान युट्युबपर ठेय रह्या सेती. येकोमाध्यमलक आपलोला ये पुराना पोवारी लोकगीत आयकता आय रह्या सेती.

आता पोवारीमा लोकगीत क् संगमाच लेख, कविता, कथा, का ॅमेडी व्हिडीओ असो साहित्य रोजक् रोज निर्मीत होय रही से. येको तुमी सब आनंद लेव. पोवारी बालकथा, पोवारी चित्रकथा, पोवारी बालकथा इ. साहित्य झुंझुरका मासिक तुमरोसाती हर मयनामा प्रकाशित करच रही से. येव अलग अलग माध्यममा उपलब्ध साहित्य तुमी बाचत अना आयकत जाव. अना हो झुंझुरका बेराबेरापर बाचत जाव अना एक दुसरो संगमा पोवारी बोलनला बिसरो नोको. आपली बोली बोलना कायला सरमानको?

चलो त् मंग......बोलबी पोवारी.....बाचबी पोवारी.....लिखबी पोवारी.

- गुलाब बिसेन

संपादक - झुंझुरका पोवारी बाल ई मासिक

मो. नं. 9404235191

निर्मिती

महेंद्र रहांगडाले

चित्रकथा

श्री गुलाब बिसेन

सृष्टी लक मामाक् गाव् जात होती. मा मनमाने गर्दी होती. सब प्रवासी की बाठ देखत होता. एतरोमा गोंदिया - तिरोडा लगी. प्रवासी बसमा बसनसाती आपापुती चंगन बस्या. बाबुजी संगमा सृष्टीबी मा बसी. गर्दीको कारण कोणीला बसन जागा मिली त् कोणीला मिलीच नही. (क् जवर एक माय हातमा धरस्यान कसी बसी उभी होती. वोका हात थरथरत होता. पर बसनला कोणीच जागा देत नोहता. (न उठस्यान आपलो जागापर बुळगी मायला बसनला जागा देयीस. अना खुद उभी रही. उतरनको बेरा (न् सृष्टीको डोस्कापर हात ठेयस्यार आशिर्वाद देईस.

होरी (होली,शिमगा)

होरी (होली)... ऋतुओं को राजा 'वसंत' मा मनायेव जाने वालो महत्वपूर्ण भारतीय त्योहार आय। वसंत ऋतु थंडी को बाद मा आवसे। भारत मा फरवरी अना मार्च मा येन ऋतु को आगमन होसे। वसंत बहुत सुहावनो ऋतु से। येन ऋतु मा सम जलवायु रवसे। हिंदू पंचांग को नुसार फागुन मास की पूर्णिमा ला मनायेव जासे।

होरी मनावन को मंग बहुत सी कहानी प्रसिद्ध सेती। पुराण को नूसार भगवान शंकर न आपली क्रोधाग्नि लक कामदेवला भस्म कर देई होतिस। तब पासुन येव त्योहार मनावन को प्रचलन से। अदीक एक लोकप्रिय पौराणिक कथा से। भक्त प्रहलाद को पिता हरिण्यकश्यप स्वयंम ला भगवान मानत होतो। वु विष्णु को विरोधी होतो। पर प्रहलाद विष्णु भक्त होतो। वोन प्रहलाद ला विष्णु भक्ति करन साती रोकीस। जब वू नहीं मानेव त उन्ह प्रहलाद ला मारन को प्रयास करीस। प्रहलाद को पिता न आपली बहीन होलिका की मदद मांगीस। होलिकाला अग्नीमा नहीं जरण को वरदान होतो। होलिका आपलो भाई की सहायता करनसाती तैयार भय गई। होलिका प्रहलादला धरकन चितामा जायकन बसी पर भगवान विष्णु की कृपा लक प्रहलाद सुरक्षित रहेव अना होलिका जरकर भस्म भई। तब पासुन होरी मनावन की प्रथा से।

माय वैनगंगा को कोरयामा बालाघाट, सिवनी, गोंदिया, भंडारा जिल्हा मा पोवार बस्या सेती। भंडारा अना गोंदिया जिला को गाव मा होरी मनवानं को आपलो एक मजा से। होरीला होली, सिमगा, फाग, फागुन भी कसेती। जिनको बिहया होरी को पुढ़ रवसे ओन टुरा टुरी ला हारगाठी की बरात आवसे अना हारगाठी को कार्यक्रम जोर सोर लका पार पडसे। पहले गावंमा होरी को पंधरा दिवस पहले पासुनच होरी की धूम सुरु होय जाय। घानमाकडी, कब्बड्डी, आटी पाटी, कुची, अंदाबिबू, बिल्ला, रेसटीम,आईचे पत्र हरवले इत्यादि खेल चालू होय जाती। चांदा को उजारोमा मस्त खेल रमकत।

होरी को दिवस सकारीच लहान टुरू पोटू आंग पाय धोएकर तयार होसेत। मंग उनको गरोमा होरी की साकर की माला जेला गाठी कसेत वा बांध सेती। घर घरमा करजी, पापड़ी बनाव सेती। महातनी बेरा होरी की पूजा साती गाव को मानवाइक को घरलक आरती आवसे। मरदमाना होरी की पूजा करसेती। अना होरी पेटाई जासे सबला गुलाल लगायकर होरी की शुभकामना देसेत।

रातवा कब्बड़ी, रेस्टीम असा खेल अना आईंमाई भी लायनो टुरी ला नवरदेव नवरी का कपड़ा पेहरावत, खासर पर बसावत अना बाजा गाजा लक बरात निकल। ओको बाद सब नाश्ता करत अना मग सामूहिक खेल खेलत। अना गाना भी गाया जात होता।

काय बाई रोहिला सजन आयेव शिमगा सण

मोर माहेरक रस्ताला खारक को बन

भाई मोरो गा गुनवान आएगा आनन

मी बाई हासीखुशी लका माहेर जावुन

मोर माय ना बाप की भेट गा लेवुन...

काय बाई........

काय बाई रोहिला सजन आयेव शिमगा सण

मोरो माहेरक रस्ताला नारेल को बन

माय मोरी बाट देखसे, डोरा रस्ताकन

मी बाई हासिखुशी लक सुकदुःख सांगून

मोर माय ना बाप की भेट गा लेवुन...

काय बाई रोहिला सजन आयेव शिमगा सण

मोरो माहेरक रस्ताला नारेल को बन

बाप मोरो निहारसे बेतीला हासकन

भोवजाई मोरी बनावसे

खेल:

कुची (चिंधि को चेंडू) को खेल:- आठ दस टुरा उनका दुय थुम(समूह)

कपळा क चिंधी को लहानसो गोल ,ओला कुची कवत, ओला झाळको नहीत घर क अंधारोमा फेकती। दुही थुम का एकेक जन धळीपरा बस्या रव्हती ना बाकीका कुची धुंडनला जाती। जेला कुची भेट त दुसर करका कुची हीसकती। एकोमा कई का टोंगरा ना कोहंगा फुटत होता। आखीरमा जेव कुची आनस्यानी आपल मुखिया टुरा जवर देत होतो ओला एक गुण भेट।

आटीपाटी को खेल :- दुही थुम ला नव नव टुरा. खो खो सारखी आठ पाटी बनावती। आठ पाटी परा एकेक जन उभो रव्ह ना कोनीला जान देत नोहोतो. नववो टुरा ला डंड्या कव्हत। वु आठही पाटीकी रखवाली कर।दुसरो पार्टीका नवही टुरा रखवाली की नजर चुकायस्यानी सामने बढत होता. ना कधी आठ ही पाटी सर करीन त उनकी जित होत होती।

घान माकड़ी: घान माकडी को खेल मा लहान टुरू पोटू ला बड़ी मजा आव। रातभर खेल, हासी मजाक चल।

परसा को फूल आनक़र उनला उबालकर रंग बनावत होता। फूल को मस्त नैसर्गिक संतरा रंग होरी की मज्या मा अधिक रंग भर देत होतो। दूसरो दिन होरी मा शेन लक बनाई अलग अलग आकृति की मार (माला) जराई जासे वा मार कोठा मा आनकर लटकाई जासे। संदुकमा मा का जुना कपड़ा निकल सेती। मरादमाना फगनोटी (गाव भर गुलाल लगाना सबसे मिलना) मांग सेती। ओको बाद महातनी बेरा चौक मा ड्राम मा रंग बनावत होता ,,सब टूरू पोटु रंग खेलकर होरी को रंगमा रंगकर रंगो को त्योहार मनाव सेती।

✍✍सौ छाया सुरेंद्र पारधी

गवत

हिवरो काचो गवतका

नहान मोठा पाना

हवा संग गावसेती

दिन रात गाना ||1||

गुदगुदी कर पायला

हासी आव खूप खूप

नही लग् चप्पल

ठंडी होय जासे धूप ||2||

बारिस को मौसम मा

दूर नको जास

आपलो मटकन की

पूरी करो आस ||3||

कोवरो कोवरो गवत

आवडसे गायला

मिठो मिठो दुध

टुरूपोटु पिवनला ||4||

धरतीपर हतरीसे

मुलायम गादी

ससा, हरिण करसेत

मांदीपर मांदी ||5||

नहानसो तुराला

रंग रंग का फुल

पाखरूला खेलनला

पाडसेत भुल ||6||

इत-उत फैलीसे

आंग येको मुलाम

मरतवरी नही होय

कोणीकोच गुलाम ||7||

सबला देसे गवत

एकताको धडा

येन गुणलका भरो

जीवन को घडा ||8||

सौ वंदना कटरे

रोशनी बेटी

रोशनी यन् बरस दसवी मा होती। गाव मा दसवीं तक स्कूल होतो अन वोको बाद बारहवी तक पढ़न लाई जवर को क़स्बा मा जावत होतिन। टुरा गिन त् कसो भी सायकल धरकन कितन भी जायकन भी पढ़ लेत होतिन परा टुरी इन लाई माय बाप ला बड़ी चिंता रहवत होती। यन् गाव लक़ एकच बेटी न् दसवी पास करी होती अना वोला ग्यारवी लाई नवुरगांव मा धाड़ीन् परा वोन टुरी ला जरसो बाहिर की हवा का लगी, बारहवी मा जावता जावता एक आढ़जात को टुरा को बहकावा मा आयकन आपरो माय बाप अन् परिवार ला सोड़कन नहान सी उमर मा पराय गई। यन कच्ची उमर मा समझ की कमी अना फिलिम की दुनिया को यव असर की टुरा टुरी को पिरम को आगे देवता तुल्य माय बाप को कोनी मोल नहाय, जसो संस्कार नवी पीढ़ी ला गलत दिशा मा जावन की सीख देसे अना असी नकली सीख को कारन् ओन टुरी ना आपरो हाथ लक़ आपरो भविष्य मा नास कर डाकिस। वोको बादमा वा कित पराई कोई ला मालूम नहाय।

अज़ यन् गाव मा एक टुरी को असो गलत रस्ता मा जावन् को कारन पुरो गाव का माय बाप मा भय समाय गय होतो की टुरी इनला बाहिर पढ़न लाई धाड़नो ओनकी जिंदगी ख़राब कर देसे। रोशनी पढ़न मा बड़ी चंट होती अन वोला पढ़न लाई साजरी लगन भी होती परा वोको माय अजी ला आता यव चिंता खाय रही होती की दसवीं को बाद मा येतरी हुशियार बेटी ला घर मा बसावबीन की बाहिर पढ़नला धाड़बीन। रितेश भी पढ़नमा साजरो होतो अना ओको भी यव इक्छा होती की बहिन ला भी पढ़वानो से परा बाबूजी तययार नही होय रहया होतिन।

सायनी माय त् अनपढ़ होती परा वय रोशनी ला रितेश को जसो पढ़ावन को इक्छा राखत होतिन। उनको कवहनो होतो मी त् रामायण भी नही पढ़ सिक सु अना मोरी बहु त् पाँचवीच तक पढ़िसे परा अज़ की पीढ़ी ला पढ़नो बढ़नों जरुरी से। रोशनी को बाद गाव मा कई टुरी होतिन जिनला आगे पढ़न की चाह होती परा एक टुरी को गलत कदम को कारन पुरो गाव मा भय को माहौल भय गयो होतो।

दसवीं मा रोशनी को ब्लॉक मा पहिलो नंबर आयो होतो। रोशनी को पिताजी वोला आगे की पढ़ाई लाई राजी नही भया । सबला रोशनी परा पुरो भरुषा होतो की वोला पढ़न लाई लगत लगन से अना वा असो वसो काई नही करन की। रोशनी की माय भी ओको पिताजी की सोच ला सही मानत

होती परा सायनी माय ला आपरी पोती परा पुरो भरुषा होतो की वू आपरो परिवार समाज को नाव रोशन करहे। सायनी माय ना रोशनी ला सांगिस की गाव मा जेतरो भी पढ़न वालों टुरू पोटू इनला हाकल कन इत् आन। रोशनी को घर मा सब आयीन् त् सायनी माय ना सबला यव पूसीस की बेटा इनला त् बाहिर पढ़नला धाड़सेती परा येक टुरी गलती की सजा आता गाव की सबच बेटी इनला सजा देनो केतरो सही रहे। वोना सबलक यव पूसीस की तुम्ही सब भी वोना टुरी जसी होय जाहो यव भय तुमरो माय-बाप ला से अना येको लाई वय तुमरो बाहर जायकन पढ़न-लिखन को विरोध मा ऊभो होय गया सेती, आता तुम्ही च सांगो की तुमला सही रहकन पढ़ाई कर आपरो अना परिवार को नाव मोठो करनो से की वोन टुरी जसो आपरो अन् समाज को नाव खाल्या पाड़नो से। तुमरो इरादा पक्को रहें त् असी काई बाधा तुमरो रस्ता मा नही आवन को से अना यव पक्को मन लक आपरो माय अजी ला यव भरुषा दिलावनो से। तुम्ही सब मिलकन सबलक पहिले आपरी माय इनला भरुषा देव अना सप्पाई नारी शक्ति मिलकन सबला यन भरुषा लक मनावनों पढ़े।

गाव मा सब लोक मिलकन बेटी इनला पढ़ायकन आगे बढ़ावन को अभियान मा जुट गईन। रोशनी को भरुषा अना वोकी पढ़ाई को प्रति असो समर्पन् को भाव ला देखकन वोको पिताजी न् आपरी बेटी ला आगे पढ़न लाई भेजनला तयार भय गयीन। साल दर साल रोशनी ना हर परीक्षा ला पास करखन कॉलेज मा प्राध्यापक बन गई। तसच गाव की कई बेटी इनना कई परीक्षा इनमा सफलता अर्जित भी करीन अन आपरो माता पिता इनको सपन ला पुरो करीन।

✍श्री ऋषि बिसेन, बालाघाट

अलक

अंधश्रद्धा को परीणाम

****

उर्वशी नौकरी लायी साक्षात्कार देणं गयी... अचानक गाडी को सामने बिल्लू आडवी गयी. जरा रुकस्यारी रस्ता पार करके ऑफिस मा गयी...देखसे त् जास्त बेरा को कारण दुसरोला नौकरी मिल गयी.

श्री उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरित)

रामाटोला गोंदिया (श्रीक्षेत्र देहू पुणे)

⁕भयी फजिती स्कूल मा⁕

होतो दशवी को कक्षामा

चालू वय वर्ष सतरा

मोरो वय को माानलक

नोहोतो मी काही भितरा.

आय बात आठवी कक्षा की

बनेव मी कक्षा नायक

बटा प्रश्न पडेव मोला

होतो का मी ओको लायक.

स्कूल मोरो लायी नवीन

लगायव थोडा नियम

पुराना टूराईन मोला

धरस्यान देईन दम.

नही चलत तोरा नियम

मौज मस्ती मा रवबीन

आमीच आजन पुराना

तोरीच का आयकबीन.

सब पुरानो टुराईन

मोरी फजिती कराईन

बेंच को दुयी बाजुलक

मोला जान नहीं देईन.

गयेव बेचपरलका

मस्त कुदत जोरलका

गुरूजीन देखीन जसो

शिक्षा देईन छडीलका.

जुनो टूराईन फजिती

करीन मोरी युक्तीलक

कक्षा नायक हटाईन

खुशी भयी वा शानलक.

मीन भी संकल्प करेव

नही करू इनको नाद

उनको हतखंडा भारी

अनुभवल करीन बाद.

====================

श्री उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरित)

रामाटोला गोंदिया (श्रीक्षेत्र देहू पुणे)

राजा बसंतम्

वृत्त: मनोरमा

(गालगागा गालगागा)

उंगतो परकास सरसा

लाल सावर लाल परसा

आल कुड़वा एन आंजन

बार फुल बांधीन काकन

या हवा आयी बसंती

संग दुल्हा आसमंती

गावता कोयार गाना

पाखरू रस का दिवाना

साज धरती राज रानी

या बिया की मेजवानी

भात कोदो स्याग दाना

जेवती बच्चा सयाना

कोन जाने कोन आती

ये घराती या बराती

पान पिवरा अक्षता का

श्लोक गाये मोर काका

गुनगुनाये चिवचिवाये

पीक पानी लहलहाये

रंग नाना जाग जागा

फाग सोनो पर सुहागा

यव ऋतू राजा बसंतम्

नव बरस संकेत उत्तम

श्री डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी'

डोंगरगांव/ उलवे, नवी मुंबई

मो. ९८६९९९३९०७

🚩गजानन स्तुती 🚩

(नवाक्षरी मनोहारी काव्य)

ग = गण गण गणात बोते

जा = जाहीर गजानन मंत्र |

न = नश्वर शरीरला भेटे

न = नवजीवन रूपी यंत्र ||१||

म = मनमा भजो गजानन

हा = हाण पाड़े संकट दूर |

रा = राग द्वेषला सोड़कर

ज = जगावो प्रेमको अंकूर ||२||

प् = परोपकारी येव गुरू

र = रचसे कयी चमत्कार |

क = कयीक भक्तका संकट

ट = टलाय देसे वू तत्कार ||३||
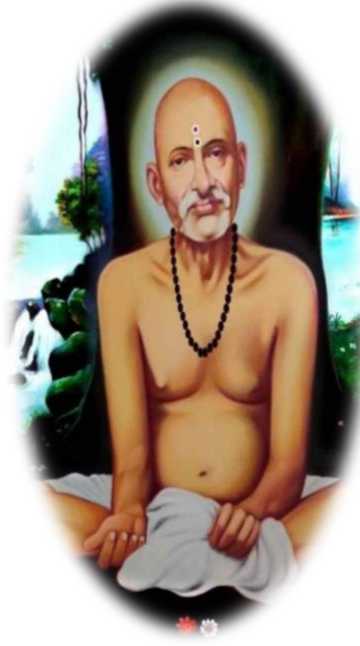
दि = दिव्य पुरुष गजानन

व = वंदनीय तू दयावान |

स = सदगुरू भक्तवत्सल

की = किर्ती तोरी से महान ||४||

हा = हासीखुशी ठेव सबला

र् = रममाण कर या सृष्टी |

दि = दिशा देखाव सन्मार्गकी

क = करदे येती कृपादृष्टी ||५||

सु = सुमरूसु मी सदगुरू

भे = भेव दूर करदे मोरो |

च् = चराचरको स्वामी सेस

छा = छायामा रव्हनदे तोरो ||६||

अनंत कोटी ब्रम्हाण्ड नायक,

महाराजाधिराज योगीराज,

परब्रम्ह सच्चितानंद, भक्त प्रतिपालक,

शेगाँव निवासी, समर्थ सदगुरू,

श्री संत गजानन महाराज की जय.

© श्री इंजी. गोवर्धन बिसेन "गोकुल"

गोंदिया, संपर्क – ९४२२८३२९४१

तुमला माहीत से का?

संकलक- श्री महेंद्र रहांगडाले

भारतीय राष्ट्रीय दिनदर्शिका

भारतीय राष्ट्रीय कालगणना (कॅलेंडर) येव खगोलशास्त्र पर आधारित से, भारतीय शास्त्रज्ञ मेघनाद सहा इनन भारतीय पुरातन कॅलेंडर मा काही सुधारणा करिन अना येव कॅलेंडर को 22 मार्च 1957 ला भारत सरकारनं स्वीकार करिस, येन कॅलेंडर मा बी 12 च मयना रवं सेत व ये सौर मंजे सूर्य पर आधारित सेट पर इनकी नावं हे चांद्र वर्ष सारखीच सेत. इनमा तिथी मंजे प्रतिपदा, द्‌वितीया असो न रयकर 1 ते 31 अंक लक् दिवस मोज् सेत. भारतीय नववर्ष की सुरवात 22 मार्च मंजे 1 चैत्र वसंत संपात दिनला होसे. येन कॅलेंडर मा 365 दिवस रवं सेत तसोच लीप को साल 21 मार्च पासून सुरू होसे. भारतीय राष्ट्रीय कॅलेंडर एवं तिरंगा, राष्ट्रगीत सारखोच एक राष्ट्रीय प्रतीक से. खाल्या को चित्र मा येणं कॅलेंडर का मयना दीस सेत.
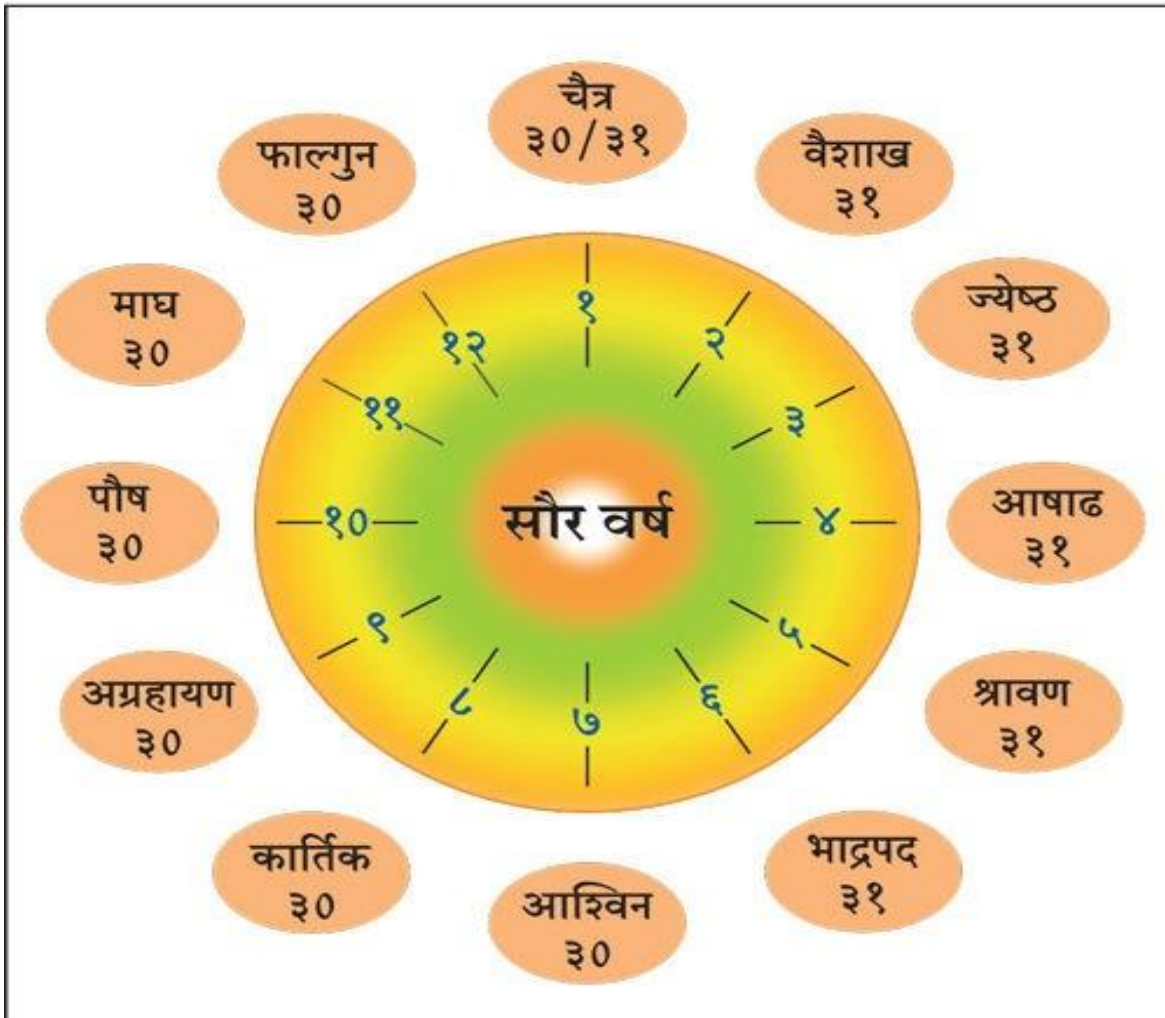
स्कूल की सहल

निसर्गरम्य करनला भ्रमंती

मास्तरजी न लिजाईन सहल

अभयारण्य मा लगीतसा प्राणी

करत होता चहल न पहल.

देखकर प्राणी अलग रंगका

खूश भय गयेव बालजगत

जंगल को राजा सिंह भी उनला

दीसेव पिंजरामा मस्त फिरत.

हरीण, लांडग्या,कोल्हा न भालू

फिरत होता आपलोच धुंदमा

बंदर कुदत झाडईनपरा

खारूताई फीरं सबको हदमा.

पक्षी दिस्या रंगीबेरंगी सबला

करत होता बहुत किलबिल

सहल भयी बहुत मजेदार

खूश भय गया सब चिलबिल.

सहल जंगल की भयी बढीया

मिल्या प्राणी रंगरंगका देखन

श्री उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरीत)

मोरो देश

००००००००

अटक पासून कटक वरी

ना गुवहाटी लक चौपाटी

कन्याकुमारी-काश्मीर वरी

जनता कीच लगीसे दाटी

एकसौ च्याळीस करोड़

जेकी जनसंख्या से भरी

अलगलग जाती,धर्मपंथ

बोलीभाषा,रंगतच न्यारी

जेका अठ्ठावीस राज्य ना

नव सेंत केंद्रशासित प्रदेश

साधू संत को देश यवं

माहात्मा देसेती उपदेश

लोकशाही दैश आमरो

यकी रंगत से न्यारी

दस दिशा करसे प्रगती

मारसे लंबीचौळी भरारी

शानलका फळकसे तिरंगा

देशकी आन-बान-शान

सब देशमा भारत महान

यलाच कसेती हिंदुस्थान

श्री डी.पी.राहांगडाले

गोंदिया

रंग भरो

बोलो पोवारी

बाचो पोवारी

लिखो पोवारी